वर्ष 26 वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई-पत्रिका अंक 5

वेदान्त पीयूष

मई 2026

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

मई २०२६

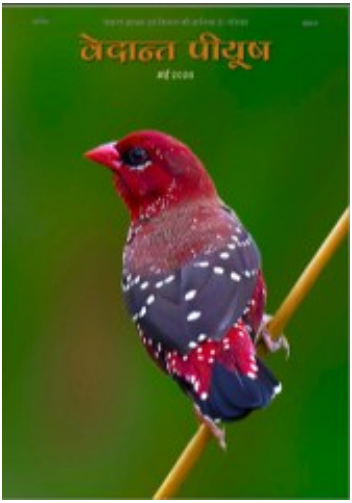

वेदान्त आश्रम,
ई - 2950, सुदामा नगर
इन्दौर - 452009
Web: https://www.vmission.org.in
email : vashram.in@gmail.com

विषय सूचि

०२	प्रकाशक
०५	श्लोक
०६	सन्देश
१३	वाक्यवृत्ति
१८	गीता और मानवजीवन
२५	जीवन्मुक्त
२९	कैकेयी चरित्र
३४	कथा – अधिक मास रहस्य
३९	आश्रम एवं मिशन गतिविधियां
५४	कार्यक्रम
५७	इन्टरनेट
५८	लिन्क

आत्मबोध - श्लोक ५७

अतद्व्यावृत्तिरूपेण वैदान्तैर्लक्ष्यतेऽद्वयम्।
अखण्डानन्दमेकं यत् तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत्।।

जिसे वेदान्तशास्त्र निषेध लक्षणा से लक्षित करते है, उन एक, अद्वय-अखण्डानन्द स्वरूपतत्त्व को ही ब्रह्म जानों।

सन्देश

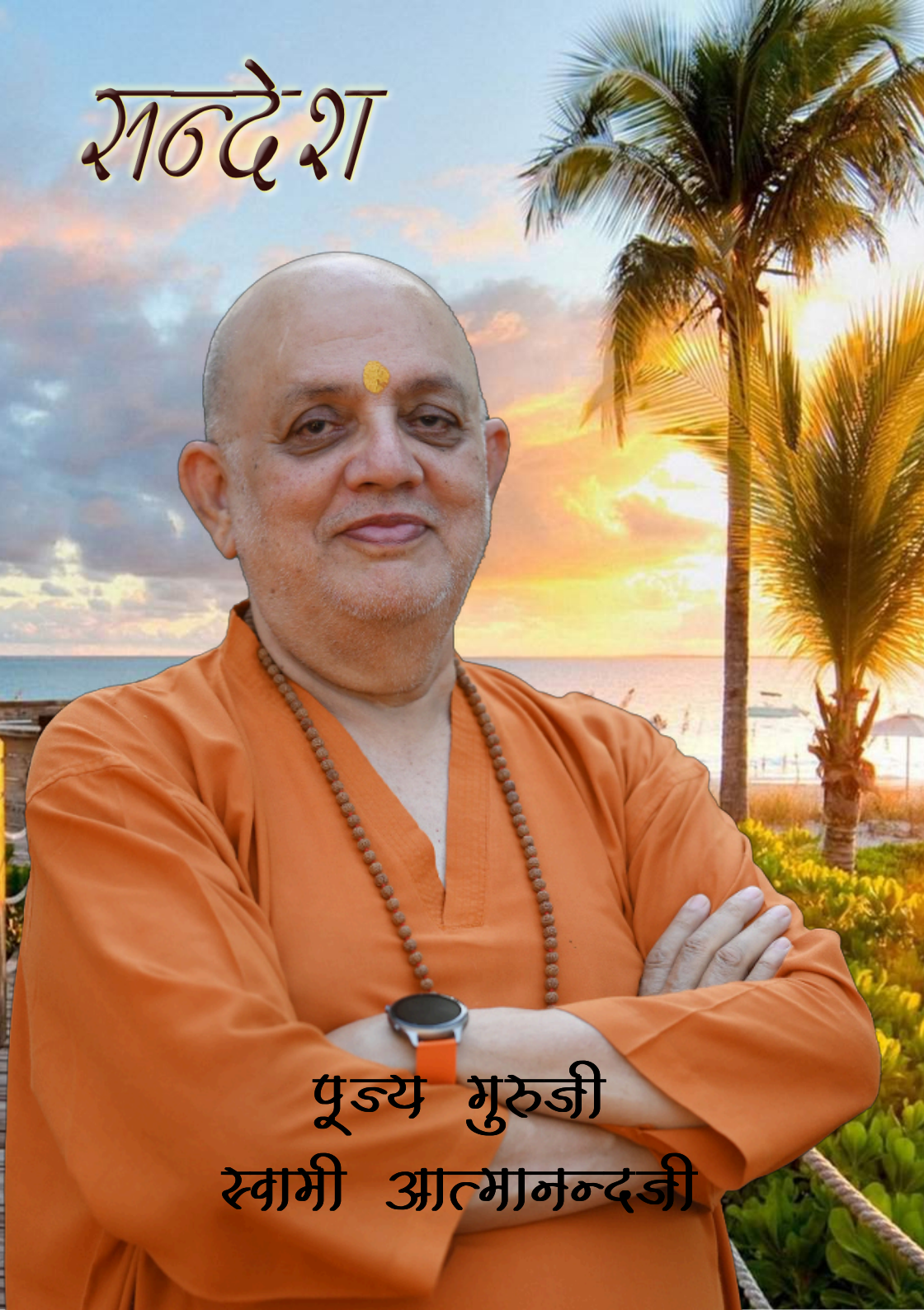

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी

आत्मज्ञान का साधन – श्रवण या ध्यान?

आत्मज्ञान मुक्ति देता है –

आत्मज्ञान वह ज्ञान है जो मोक्ष प्रदान करता है। मोक्ष का अर्थ है स्वतंत्रता–उन सभी बाधाओं और सीमाओं से मुक्त होना, जिन्हें हमने अज्ञानवश स्वयं पर आरोपित कर लिया है। हमारी असुरक्षाएं, महत्वाकांक्षाएं और इच्छाएं सब हमारे अपने आत्मा के बारे में दृष्टिकोण पर आधारित है।

विडम्बना यह है कि आधुनिक प्रणाली में कहीं भी अपने वास्तविक स्वरूप के सत्य के बारे में नहीं सिखाया जाता। किसी भी स्तर पर आत्म-ज्ञान हमारे पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं है। जो ज्ञान हमारे प्राचीन शिक्षातंत्र का मूल था, वह अब लगभग समाप्त हो गया है और उसकी जगह केवल बाहरी जगत से जुड़ी जानकारी ने ले ली है। ऐसी जानकारी जिससे हम केवल जीवनयापन कर सकें।

जीवन के दार्शनिक सत्य, जो गहन चिन्तन से प्रामाणित थे, आज केवल 'तेज बनने' वाली सूचनाओं से प्रतिस्थापित हो गए हैं - और यही आधुनिक शिक्षा कहलाती है। ऐसा नहीं है कि यह सब आवश्यक नहीं है, परंतु यहां मुख्य बात यह है कि 'देखी जाने वाली वस्तु' से कहीं अधिक महत्वपूर्ण 'देखने वाला- द्रष्टा' है। हमें उस जानने वाले को उचित महत्व देना चाहिए -जो सब कुछ जानता है।

up

आत्मज्ञान सर्वोच्च है:

हमारे शास्त्रों में अपराविद्या और पराविद्या दोनों को महत्व दिया गया है। इसी कारण प्राचीन भारत में सभी क्षेत्रों–जैसे ब्रह्माण्डविज्ञान, साहित्य, कला, विज्ञान, अर्थशास्त्र और दर्शन में महान उंचाईयां प्राप्त हुई।

हम उन महान आचार्यों को नमन करते हैं जिन्होंने हर क्षेत्र में गहन खोज की, किन्तु आत्म–ज्ञान को सर्वोच्च स्थान दिया। वेदों के महर्षियों ने यह उद्घोष किया कि–

अयम् आत्मा ब्रह्म

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक जीव वस्तुतः एक ही अनंत सत्य है।

यह अत्यंत अद्भुत उद्घोष है। न केवल उन्होंने इस सत्य का अनुभव किया, बल्कि इसे प्रामाणित भी किया और अन्य लोगों को भी मार्ग दिखाया। यह सभी के लिए परम आत्म–सम्मान का आधार है।

आत्मज्ञान कैसे प्राप्त होता है?

आत्मज्ञान के विषय में हमारी परंपरा अत्यन्त समृद्ध है। यहां अनेकों ग्रंथ और विचार

up

उपलब्ध हैं। किसी भी सिद्धान्त को बिना जांच-परख के स्वीकार नहीं किया जाता; हर बात का गहन परीक्षण किया जाता है।

प्रश्न-उत्तर की शैली ही उपनिषदों, गीता और रामायण का मूल है। अब हम एक महत्वपूर्ण विषय देखते हैं कि आत्मसाक्षात्कार का प्रमुख साधन क्या है?

दो सम्प्रदाय:

अद्वैत वेदान्त में मुख्यत: दो प्रमुख परम्पराएं हैं -

1. विवरण सम्प्रदाय (आचार्य प्रकाशात्मा द्वारा)
2. भामती सम्प्रदाय (आचार्य वाचस्पतिमिश्र द्वारा)

दोनों अद्वैत (अद्वैतवाद) को स्वीकार करते हैं, किन्तु साधना और दृष्टिकोणमें कुछ भिन्नता हैं।

विवरण सम्प्रदाय:

इस मत के अनुसार, एक ज्ञानी गुरु द्वारा शास्त्रों का श्रवण ही आत्म-ज्ञान का मुख्य कारण है। जब ज्ञान का दीपक एक बार प्रज्ज्वलित हो

जाता है, तब अन्य साधन
– जैसे मनन और निदिध्यासन संदेहों को दूर करने और ज्ञान में स्थित रहने में सहायक होते हैं।

जैसे किसी भी विषय में एक अच्छे शिक्षक से प्रेरणा और समझ मिलती है, वैसे ही यहां भी गुरु के साथ बिताया गया समय अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। इसलिए श्रवण को सर्वोपरि माना गया है।

<u>भामती सम्प्रदाय :</u>

भामती परम्परा के अनुसार, शास्त्रों का अध्ययन केवल परोक्ष ज्ञान देता है।
उसके बाद साधक को स्वयं अभ्यास करना पड़ता है– विशेषरूप से निदिध्यासन या समाधि का–जिससे अपरोक्षानुभूति (प्रत्यक्ष अनुभव) प्राप्त होता है।

इस मत में गुरु मार्ग दिखाते हैं, परंतु अंतिम अनुभूति साधक के स्वयं के प्रयास से ही होती है।

up

हमारी परम्परा : विवरण सम्प्रदाय

दोनों परम्पराएं आत्म-ज्ञान को लक्ष्य मानती हैं, परन्तु उसे प्राप्त करने का तरीका अलग अलग बनाती हैं।

हमारी परम्परा विवरण सम्प्रदाय का अनुसरण करती है, जिसमें गुरु से शास्त्र-श्रवण को मुख्य साधन माना गया है।

हम उन सभी महान आचार्यों को प्रणाम करते हैं जिन्होंने हर विषय का गहन विश्लेषण किया और किसी भी बात को अंध विश्वास पर नहीं छोड़ा।

ॐ तत्सत्

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

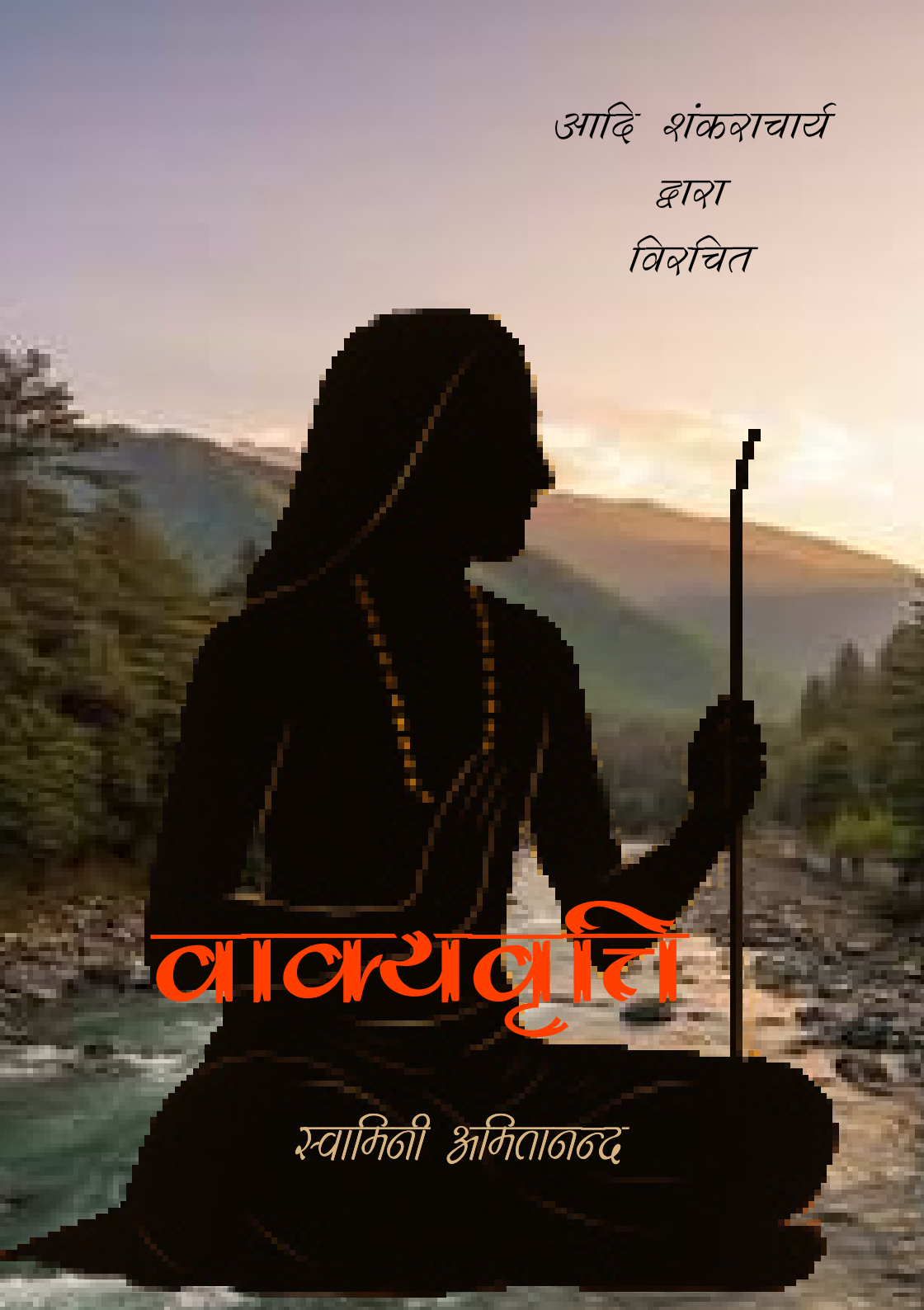

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

श्लोक – ३४

विजिज्ञास्यतया यच्च वेदान्तेषु मुमुक्षुभिः।
समर्थ्यतेऽतियत्नेन तद्ब्रह्मेत्यवधारय॥

वेदान्त शास्त्रों में मुमुक्षुओं के द्वारा जिस तत्त्व को गहन विचार योग्य बताया है, वह ही ब्रह्म है – ऐसा निश्चय करो।

वाक्यवृत्ति
श्लोक संख्या : ३४

आचार्य ने पूर्व श्लोकों में श्रुति प्रमाण से ब्रह्म की सच्चित् व अनन्तस्वरूपता बताई। सच्चित्स्वरूप ब्रह्म ही समस्त जगत का कारण तथा अनन्तस्वरूप है।

ब्रह्म को अपनी आत्मा की तरह जानना ही जीवन का परं लक्ष्य है। यही संसार से मुक्ति का हेतु है। मोक्षाकांक्षी को इसे अवश्य जानना चाहिए। इस बात को तैत्तिरीय उपनिषद् की भृगुवल्ली में प्राप्त भृगु–वरुण संवाद से बताते हैं, जहां भृगु वरुणदेव के पास शिष्यभाव से उपसदन करते हैं।

भृगु वरुणदेव से निवेदन करते हैं कि हमें ब्रह्म के बारे में बताइयें। तब वरुणदेव उन्हें ब्रह्मज्ञान देना आरम्भ करते हैं और कहते हैं 'तद्विजिज्ञासस्व'। इससे इस तत्त्व की सूक्ष्मता को संकेत करते हैं कि इसमें अधिक प्रयास की आवश्यकता है। वे कहते हैं कि, 'तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व'। तप के द्वारा ब्रह्म को जानों। ब्रह्म अन्य विषयों से अत्यन्त विलक्षण होनेसे इसे जानने का तरीका अन्य विषय को जानने से अत्यन्त विलक्षण होता है। इसलिए इसमें अधिक यत्न की आवश्यकता है।

अपने से पृथक् विषय के ज्ञान व प्राप्ति के लिए उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करके कुछ योजना बनाकर शारीरिक आदि चेष्टा व पुरुषार्थ किया जाता है। किन्तु ब्रह्म हमारी वास्तविकता, जगत का यथार्थ होने से उसे विषय की तरह नहीं जाना जाता है। उसके लिए तप की आवश्यकता है। जिसमें सभी बाह्य विषयों का महत्व समाप्त करके अपनी ओर अभिमुख होकर स्व पर विचार किया जाता है।

up

यहां दो बिन्दु हैं एक मूलरूप से अपने बारे में अज्ञान और दूसरा मोहात्मक, अप्रामाणिक निश्चय। पहले अपने बारे में किए अप्रामाणिक निश्चयों पर विचार करके उसे दूर किया जाता है। उसके उपरान्त अज्ञान की निवृत्ति होती है। जिस प्रकार रस्सी के बारे में अज्ञानवश की गई सर्प की कल्पना में सर्प का पहले निषेध होने पर रस्सी का ज्ञान होता है। उसी प्रकार जब स्वविषयक धारणाओं को त्यागते है, तब सब का निषेध हो जाने पर सच्चिदानन्द ब्रह्म को अपनी आत्मा की तरह जान लेते हैं।

वरुणदेव भृगुजी को इसी प्रकार क्रम से स्थूल से सूक्ष्म धरातल पर विचार देकर ब्रह्म का उपदेश दे रहे हैं। प्रत्येक बिन्दु पर भृगु विचार करके स्वविषयक मोहजनित धारणाओं को त्यागते जाते हैं और अन्ततः ब्रह्म को अपनी आत्मा की तरह जान लेते हैं। इस प्रकार मुमुक्षु को गुरुचरणों में बैठकर वेदान्तश्रवण के माध्यम से ब्रह्म को अवश्य जानना चाहिए।

up

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

- ३७ -

नचिकेता की सत्यनिष्ठा

गीता और मानवजीवन

नचिकेता की सत्यनिष्ठा

उपनिषद् में बालक नचिकेता की बात आती है। उनके पिता एक बड़ा यज्ञ कर रहे थे। छोटा बालक नचिकेता यज्ञ की समस्त प्रक्रियाओं का अवलोकन कर रहा था। यज्ञ सम्पन्न होने जा रहा था और ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जा रही थी। तब नचिकेता ने देखा कि उनके पिताजी अत्यन्त वृद्ध, अनुपयोगी गौ, जो दूध देने में भी सशक्त नहीं थी, उसे दक्षिणा में दे रहे थे। बालक को बहुत दुःख हुआ। पिताजी से ही उन्होंने शास्त्र की शिक्षा प्राप्त करी थी। ऐसी दक्षिणा देनेवाले का अहित ही होता है, वह नरक में जाता है और बहुत दुःख भुगतता है – ऐसे शास्त्रवचन

में उनकी श्रद्धा थी। उनको लगा कि इतना बड़ा यज्ञ विफल हो जाएगा और उपर से पिताजी को दु:ख भुगतना पडेगा। इसलिए ऐसा तो नहीं दिया जाना चाहिए। कदाचित् पिताजी के पास दक्षिणा में देने की पूंजी खतम हो गई होगी इसलिए ऐसी गायों का दान देना आवश्यक हो गया होगा। पुत्र भी तो पिता की सम्पत्ति होती है। पिताजी मेरा दान कर सकते है। ऐसा सोचकर नचिकेता पिताजी के पास गया और पूछने लगा, 'पिताजी! आप मेरा दान किसे करेंगे?' पिताजी बहुत व्यस्त थे। नचिकेता ने जब बार-बार यह प्रश्न पिताजी को दिया तो उनके पिता क्रोधित हो गएं और उसे कहा, 'मैं तुम्हारा मृत्यु को दान करता हूं।'

क्रोध में आकर पिताजी ने जो कुछ कहा है, उसका पालन हो यह

up

आवश्यक नहीं है। आज के समय में पिताजी के ऐसा बोलने पर संतान के मन में आएगा, 'बोलते रहते है, वृद्ध हो गए है न! डनके बोलने का कोई ठिकाना नहीं है। उनको तो आदत ही पड़ी हुई है। विगैरह।' किन्तु नचिकेता ने सोचा कि पिताजी का वचन सत्य होना ही चाहिए। उनके वचन का भ।ग हो तो उनको नरक में जाना पड़ेगा। इसलिए उन्होंने कुछ समय पश्चात् पिताजी के पास जाकर कहा, 'आप हमें यमराज के पास जाने की आज्ञा दीजीएं।' पिताजी का क्रोध अब शान्त हो गया था। उन्होने कहा यमराज के पास जानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। यह तो क्रोध के आवेग में ही कहा था। किन्तु नचिकेता दृढ़ था; 'एक बार कहा इसलिए वचन तो सत्य होना ही चाहिए। अपने कुल में कभी भी कोई असत्य

up

बोला नहीं है। सभी महापुरुष भी सत्य का पालन करते हैं। आपको भी उसका पालन करना चाहिए। आपको यदि लग रहा हो कि सत्य का पालन करने से हमारा बलिदान देना पडेगा, हम मर जाएंगे, तो इस देह में है क्या? खेत में जैसे फसल पकती है और खतम हो जाती है वैसे ही यह देह भी पकता है, वृद्ध होता है और खतम हो जाता है। ऐसे देह के लिए सत्य का त्याग नहीं किया जाना चाहिए।'

अब पिताजी को कुछ बोलने का न रहा। बहुत ही संकोच में उन्होंने आज्ञा दी। नचिकेता यमराज के पास गया। उस समय यमराज किसी कार्यवश प्रवास पर गए थें। तीन दिन के बाद यमराज लौटे। तब तक नचिकेता उनके द्वार के पास ही भुखा- प्यासा खड़ा रहा।

up

यमरासज की पत्नी ने उन्हें अंदरआने हेतु खूब आग्रह किया किन्तु नचिकेता ने कहा कि, 'मैं यमराज की सम्पत्ति हूं। उनकी आज्ञा के बगैर मैं कुछ नहीं कर सकता।'

यमराज आने पर उन्होंने यह सब देखा। तीन दिन से यह बालक भुखा-प्यासा दरवाजे पर खडा है, यह देखकर वे बहुत प्रसन्न हुएं और कहा कि, 'तुम तीन दिन भुखा रहा उसके लिए हम तुम्हें तीन वरदान देते हैं। तुम जो भी चाहो मांग लो।'

प्हले वरदान में नचिकेता ने कोई धन-सम्पत्ति, राज्यवैभव नहीं मांगे। उन्होंने तो मांगो, 'मेरे पिताजी ने अपनी इच्छा के विपरीत मुझे यहां आनेकी आज्ञा दी थी, इसलिए वे बहुत चिंतित होंगे। वे चिन्तामुक्त हो जाएं और हमें वापिस आया देखकर हर्षपूर्वक

up

हमारा स्वीकार करें ऐसा वरदान दीजिएं।' यमराज ने बालक की उदारता और उनकी चतुराई से प्रसन्न हुए और उसके अनुरूप वरदान दिया।

छूसरे वरदान में नचिकेता ने मांगा, 'समाज के लोगों को स्वर्ग सुख की बहुत इच्छा होती है। हमें ऐसी विद्या दीजिएं कि जिसके अनुह्मठान से लोगकी स्वर्ग में जाने की इच्छा पूर्ण हो।' इस प्रकार पहले परिवार का हित और फिर समाज का हित।

तीसरे वरदान में नचिकेता ने मांगा, 'हमें मृत्यु का रहस्य समझाइएं।' यमराज ने इस मांग को छोड़ देनेके लिए उन्हें अनेकों प्रकार के प्रलोभन दिएं, किन्तु नचिकेता इन लालच में नहीं फंसते हुए अपनी मांग पर दृढ़ रहा। तब उनकी सत्यनिष्ठा देखकर यमराज ने उन्हें इस विषय का उपदेश दिया।

up

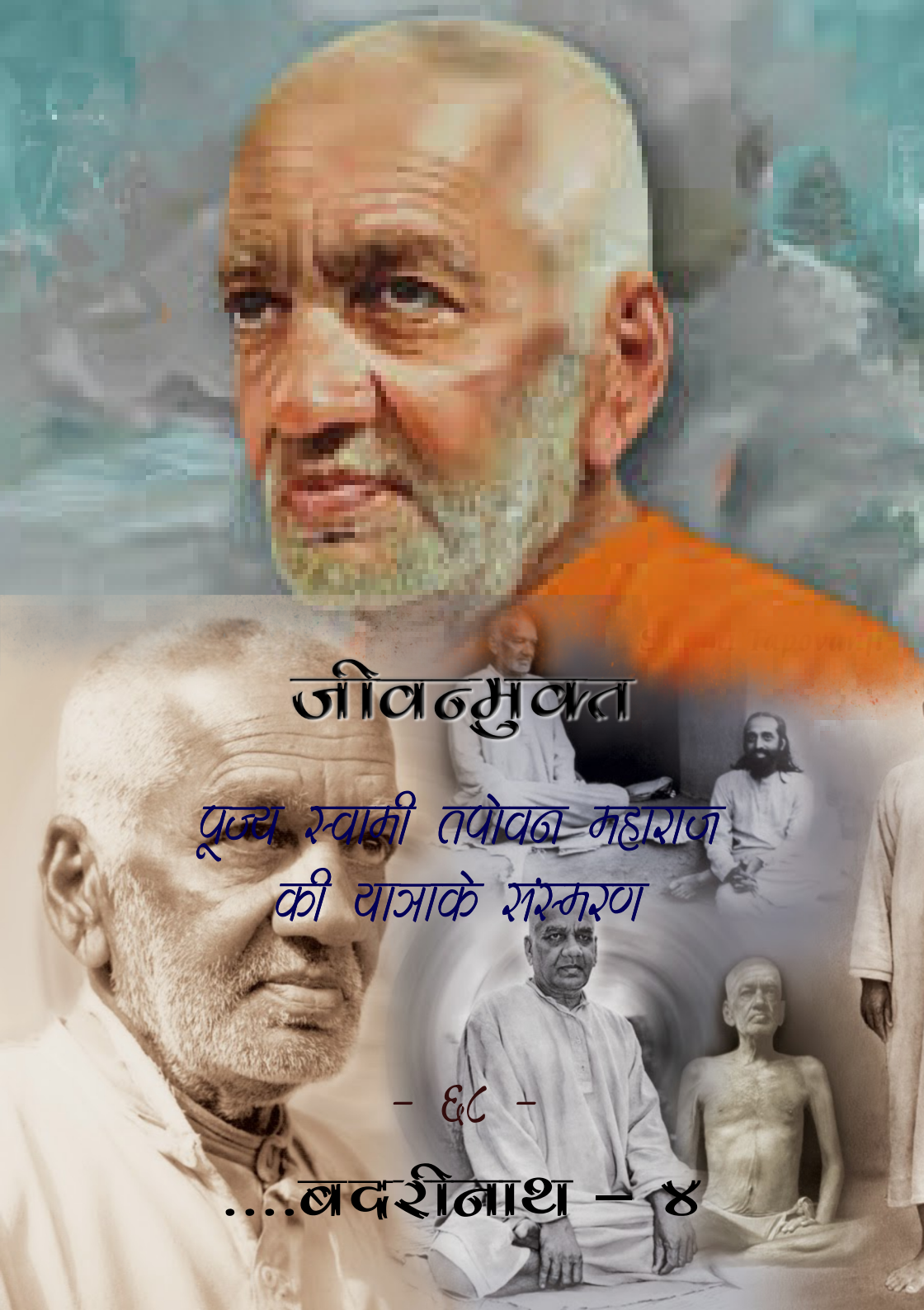

जीवन्मुक्त

पूज्य स्वामी तपोवन महाराज की यात्राके संस्मरण

- ६८ -

....बदरीनाथ – ४

जीवन्मुक्त बद्रीनाथ – ०४

वसुधारा बदरीनाथ से छः मील उपर की ओर है। यों तो रेणुकूट पर्वत के उपर से अनवरत बहती हुई जलधाराएँ ही मुख्यतः कहलाती है, किन्तु इस जलधारा का निकटवर्ती प्रदेश भी वसुधारा कहलाता है। पौराणिकों की कल्पना है कि अष्ट वसुओं ने इस जलधारा के पास तप किया था, अतः इसका वसुधारा नाम पड़ा है। युधिष्ठिर का स्वर्गगमन द्वार 'स्वर्गारोहिणी' नामक पुण्यस्थान भी यहां से अधिक दूरी पर नहीं है। नारायण पर्वत, रेणुकूट पर्वत, कुबेर पर्वत इन विपुल शैलों के बीच में विराजमान इस मैदान की महिमा तथा एकान्त मंजुलता का, अहा! मैं किस प्रकार वर्णन करूँ?

आज कर्कट संक्रान्ति है। यहीं वसुधारा में मेरी

निवासगुफा के समीपवासी एक गड़रिये मित्र जब प्रातः स्नान तथा तिलक आदि कर आये तो मुझे इस त्यौहार का बोध हुआ। केरल देश की तरह हिमगिरि शिखर पर भी संक्रान्ति मनायी जाती है। देखिए! हमारी मातृभूमि भारत के दृढ़बद्ध सामाजिक संगठन ने कन्या –कुमारी से हिमालय तक समानरूप से संक्रान्ति को त्यौहार का दिन मान लिया है। प्रभात में नहाते हैं! शुभ्र वस्त्र पहन लेते है। मिष्ठान्न आदि पका करके देवताओं की पूजा करते है। उनका आहार करके स्वयं आनन्द का अनुभव करते हैं। भारतीय जन अनादि काल से एक संस्कृति तथा एक समाजनिष्ठ होकर रह रहे हैं। मेरी यही कामना है कि आगे भी हम सभी अपनी देशीय महिमा को याद दिलाने वाले ऐसे आचारों का सादर अनुष्ठान

up

करें तथा इस प्रकार एक समान होकर एकता बुद्धि के साथ चिरकाल पर्यन्त जीवनयापन करते रहें।

लेकिन इस हिमाद्रि शिखर पर, देवखात पाषाणगुहा में, मैं पुण्यतिथि संक्रान्ति कैसे मनाउँ? संक्रान्ति का मैं कैसे उपभोग करूँ? संक्रान्ति को जानते हुए भी इसका मैं आदर न करूँ तो धार्मिक महिमा तथा देशीय महिमा के तिरस्कार का पाप मुझ पर पडेगा। स्वमातृभूमि में अभिमान तथा स्वधर्म में भक्ति न रखने वाला महान् कृतघ्न होता है। केरलीय एक अच्छा केरलीय बनने और भारतीय एक उत्तम भारतीय बनने का प्रयत्न करे। इसके विपरीत यदि हम एक अँग्रेज या अमेरिकी बनने का प्रयत्न करेंगे तो यह बहुत बड़ी मूर्खता होगी।

up

श्री रामचरितमानस पर आधारित

— ०७ —

कैकेयी चरित्र

कैकेयी चरित्र – ०७

कैकेयी ने राम के वनगमन को ही मुख्य प्रश्न बना लिया। वस्तुतः कैकेयी के मन में भरत के राज्याभिषेक का मुख्य प्रश्न था भी नहीं। वे तो शुद्ध बदले की भावना से भरी हुई थी। उन्हें लगता है कि उनके साथ विश्वासघात किया गया है। राम के स्वभाव में परिवर्तन की कल्पना ने उन्हें मर्माहत कर दिया था। महाराज दशरथ से लेकर अध्योध्या का प्रत्येक व्यक्ति उन्हें षडयंत्र में सम्मिलित प्रतीत होता है। अब जब उन्होंने अपनी समझ से सारी योजना को विनष्ट करने में सफलता प्राप्त कर ली तब महाराज उसे अपनी वाचिक विनम्रता से पुनः उसी स्थित में लौटा लेना चाहते हैं। इसलिए महाराज श्री

की वाणी ने उनके क्रोध को और भी भड़का दिया। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि भरत के राज्याभिषेक में भले ही विलम्ब हो किन्तु राम के वनगमन में एक दिन का विलम्ब भी उन्हें असह्य है। इसलिए वे स्पष्ट कह देती हैं कि यदि प्रातःकाल होते ही तपस्वी-वेष में राम वन नहीं चले जाते तो अपने प्राण का परित्याग कर देगीं। साथ ही उन्होंने यह भी स्मरण दिला दिया कि महाराज इसके बाद जीवित रहकर भी अपयश के कारण मृत्यु की तुलना में अधिक कष्टकारक जीवन का वरण करने के लिए बाध्य होंगे। गोस्वामीजी इन क्षणों में कैकेयीकी तुलना वेगवती नदी से करते हैं जिसमें क्रोध की बाढ़ का जल उमड़ रहा है और जो अपने ही कूल कगारों को विनष्ट करती हुई विपत्ति के सिन्धु की ओर बढ़ती चली जा रही है। नदी अपने जल के द्वारा अपने किनारे के वृक्षों को सींचती है। पर बाढ़ आने पर सबसे पहले विनाश के पात्र भी वे ही बनते हैं।

up

कैकेयी की मनोस्थिति भी ठीक इसी प्रकार की थी। वे क्रोध के आवेग में अपने स्नेह से पालित लोगों को ही कष्ट देने के लिए उतावली हो उठीं।

राम को वन भेजने के उतावलेपन के पीछे सम्भवतः एक कारण और था। कहीं न कहीं अन्तर्मन में कैकेयी के समक्ष भरत के स्वभाव की समस्या थी। उन्हें यह भय सता रहा होगा कि क्या भरत के आगमन के बाद राम का वनगमन सम्भव होगा? भरत की राम के प्रति प्रीति और राजसत्ता के प्रति उदासीनता का भान कैकेयी को न हो रहा हो, यह सम्भव नही है। इसलिए वे ऐसे वातावरण की सृष्टि करना चाहती थी, जिसमें भरत राज्य स्वीकार करने के लिए बाध्य हो।

कैकेयी के हठ भरे आग्रह के समक्ष महाराज को पराजय स्वीकार करनी पड़ी। फिर तो कैकेयी के

up

समक्ष कोई अवरोध न रहा। सुमन्त को उन्होंने अवश्य क्षणिक अवरोध के रूप में देखा। इसीलिए प्रातःकाल महाराज की कुशलता का समाचार जानने की जिज्ञासा लेकर आए हुए सुमन्त को तत्काल रामभद्र को लाने का आदेश दिया। यह एक विचित्र विरोधाभासी तथ्य है कि अविश्वास के इन क्षणों में भी कैकेयी यदि किसी के प्रति आश्वस्त थी तो वह एकमात्र श्री राम के ही थे।

up

कथा प्रसंग

अधिक मास रहस्य

कथा प्रसंग – अधिक मास रहस्य

इस वर्ष 2083 में हिन्दु पंचांग में एक अतिरिक्त महीना आता है, जिसे अधिक मास कहा जाता है। यह अधिक अथवा अतिरिक्त महीना क्यों आता है?

हिन्दू कैलेण्डर 'चन्द्रमा की परिकम्मा' पर आधारित है। एक चन्द्र मास लगभग 29.5 दिनों का होता है। जब कि एक सौर मास (ग्रेगोरियन कैलेण्डर) 30 या 31 दिनों का होता है। इस प्रकार चन्द्रवर्ष में 354, सौरवर्ष में 365 दिन होते हैं। दोनों में लगभग 11 दिनों का अन्तर होता है। हर तीन वर्ष में यह अंतर करीब एक महीने का हो जाता है। इस अंतर को संतुलित करने हेतु हर तीन वर्ष में एक 'अधिक मास' जोड़ा जाता है।

इस महीने को 'पुरुषोत्तम मास' भी कहा जाता है। हिन्दू ज्योतिष के अनुसार सूर्य हर चन्द्रमास में राशि बदलता है, 12 माह की 12 राशि तो हो जाती है। किन्तु अधिकमास में कोई राशि परिवर्तन नहीं होता। अतः उनके कोई देवता भी नहीं होते। अतः इसे 'मलमास' अर्थात् व्यर्थमास कहा जाता है।

ठसके पीछे एक कथा है कि यह मलमास होने से प्राचीन काल में इसे अशुभ माना जाता था। इस अपमान से दुःखी होकर अधिक ने मानवरूप धारण करा और भगवान् विष्णु से मुक्ति की प्रार्थना की।

करुणामय श्री विष्णु ने उसे वरदान दिया कि वह उनके समान ही पूजनीय होगा और उसे अपना नाम 'पुरुषोत्तम' प्रदान किया। भगवान विष्णु ने कहा कि जो भी इस पुरुषोत्तम मास में 'सत्कर्म' करेगा। वह सभी दुःखों से मुक्त होगा।

इसलिए यह महीना अत्यन्त पवित्र माना जाता है। इसमें भगवान् विष्णु की पूजा, भजन, कथाश्रवण और श्रीमद् भागवत जैसे ग्रंथों का पाठ किया जाता है। लोग जुआ, मद्यपान, तम्बाकू और मांसाहार से दूर रहकर व्रत भी रखते हैं। इस माह में लोग 'सात्विक आहार' ग्रहण करते हैं जिससे कि मन भगवान् की आराधना और अध्यात्म साधना में स्थिर रहे।

इस प्रकार अधिक मास केवल एक खगोलीय समायोजन नहीं, बल्कि चित्तशुद्धि, भक्ति और भगवान् विष्णु के स्मरण का आध्यात्मिक पर्व है।

up

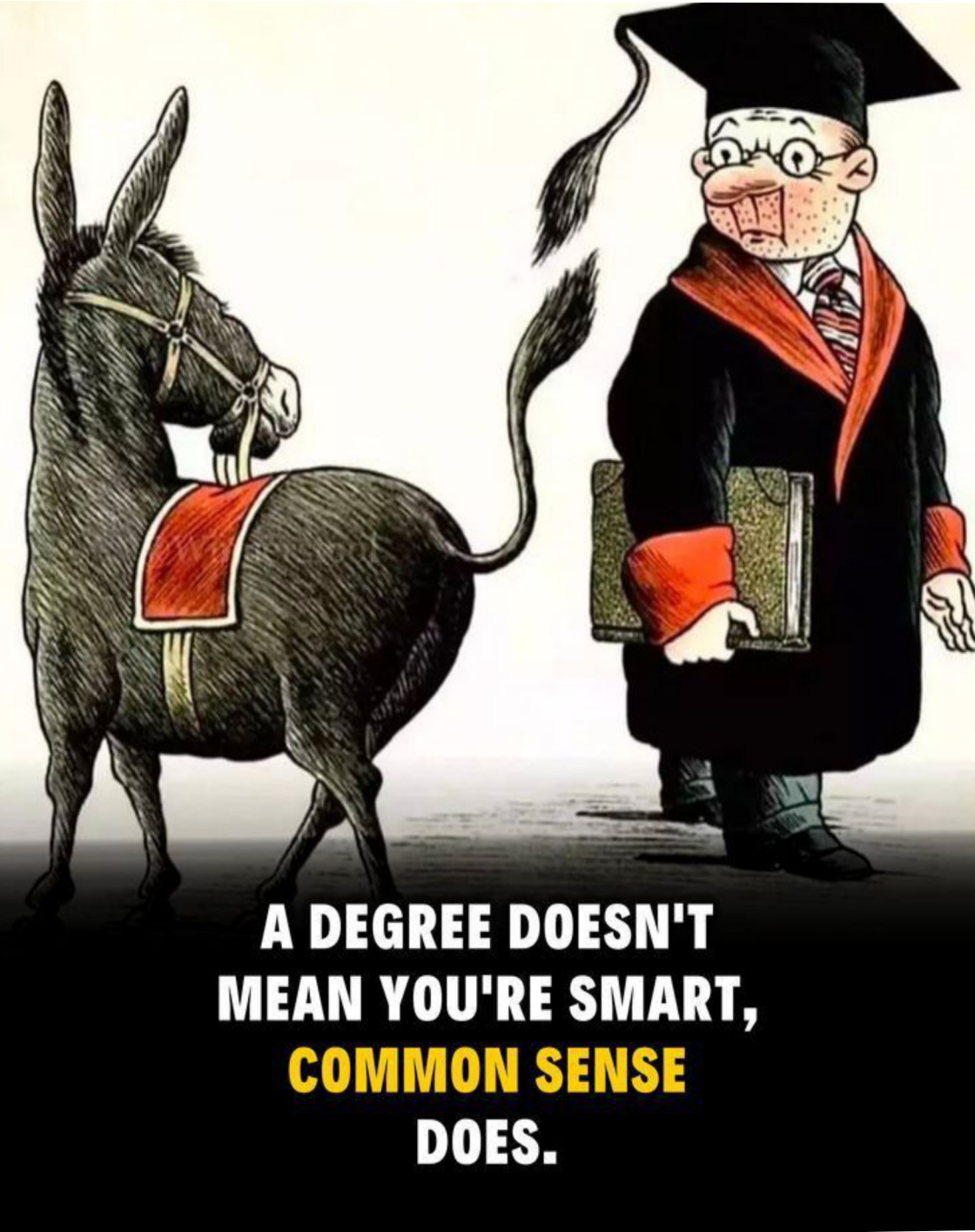
A DEGREE DOESN'T
MEAN YOU'RE SMART,
COMMON SENSE
DOES.

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

Activities

Weekly Online Classes

up

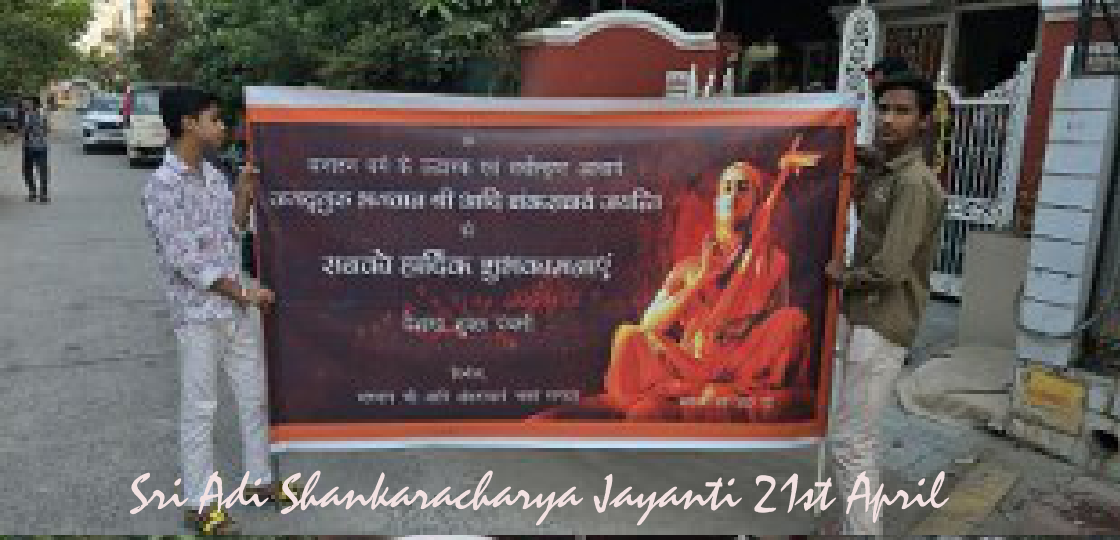

Sri Adi Shankaracharya Jayanti 21st April

Shobha Yatra taken out with great fanfare

Devotees from all over Indore

Activities

Activities

Activities

Puja at Shankaracharya Dwaar

Abhisheka

up

Activities

Altar of Shankaracharya at Ashram

Activities

Stotra Paath & Ashirwachan

up

Activities

Evening Arti

At Ashram

up

Rohit Das &
family

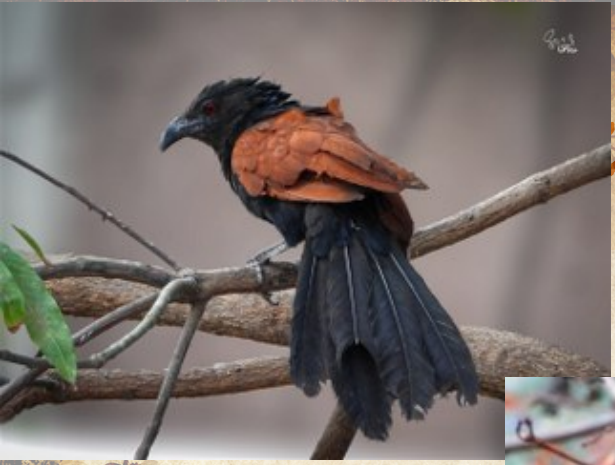

tivities

Ashram Birds

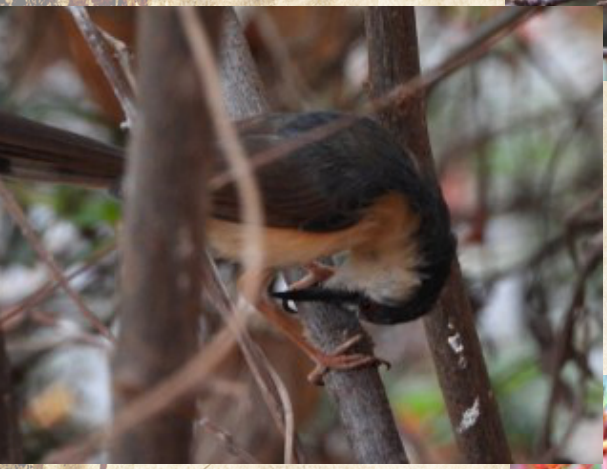

Programs

Poojya Guruji Swami Atmanandaji

conducts

Daily Classes on

Bhagwad Geeta

with Shanker Bhashya on

Chapter 5 (Karma Sanyas Yoga)

@ Vedanta Ashram, Indore

VEDANTA CAMP ON

GURU POORNIMA

by Poojya Guruji Swami Atmanandaji

From 26th to 28th July

On Pratah Smaran Stotram

@ Vedanta Ashram, Indore

Programs

VEDANTA CAMP

by P. Swamini Amitanandaji

From 12th to 16th July

On STHITAPRAGYA

Gita Ch. 2

Raman Adhyatmik Sewa Kendra,

Kheda Dist, Gujrat (In Gujrati)

VEDANTA CAMP

by Poojya Guruji & Ashram Mahatmas

From 30th Aug to 4th Sep

On Gita 8th Chapter

@ Vedanta Ashram, Indore

Click here for more details

Registration Form

Programs

Online Vedanta Class

On Upadesh Saar (Ramana Maharshi)

By P. Swamini Amitanandaji

Every Saturday (4.00-5.00 PM)

on Google Meet

Online Gita Pravachans

Gita 6

By P. Swamini Samatanandaji

Every Sunday (4.00-5.00 PM)

on Google Meet

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS
SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA
SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING
MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (Click here)

GITA / UPANISHADS / PRAKARAN GRANTHAS
SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA
SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING
MORAL STORIES ETC

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Piyush - Apr '26 / Vedanta Sandesh - May '26

Visit us online :

Vedanta Mission

Check out earlier issues of :

Vedanta Piyush

Join us on Facebook :

Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel

Vedanta Ashram Channel

Published by:

Vedanta Ashram, Indore